https://www.echetana.com/Vol.-10, No.-02, April-June 2025, pp. 119-121

CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.445

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम और शिक्षकों की बदलती भूमिका

डॉ. चंचल लता
असिस्टेंट प्रोफेसर
संजय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
जयपुर
Email – chanchal.yadav24@gmail.com, Mobile- 8769930000

……………………………………………………………….

First draft received: 05.04.2025, Reviewed: 18.04.2025
Final proof received: 11.05.2025, Accepted: 28.05.2025

सार संक्षेप

मात्र शिक्षा के माध्यम से ही ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण कर पाना संभव है जो वातावरण और मूल्यों के संरक्षण के साथ ही अनुकूल परिवेश के निर्माण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है क्योंकि व्यक्ति में मानवता दिशा और सांस्कृतिक चेतना का उन्मेष शिक्षा के द्वारा ही संभव है प्रशिक्षण या अन्य संप्रेषण व्यवहार के माध्यम से नहीं। अत: यह कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा वह शैक्षिक आयोजन है जिसमें विभिन्न स्तरीय और वर्गीय अध्यापकों को इस तरह से शिक्षित करने के लिए पर्यतन किया जाता है कि आने वाले विद्यार्थियों को ज्ञान और मूल्यों के हस्तांतरण के साथ ही उनके समस्त शैक्षिक और विकासात्मक दायित्व को ग्रहण करने में वह सक्षम हो सके तथा उनमें तकनीकी कुशलता, वैज्ञानिक चेतना, संसाधन संपन्नता और नवाचार के साथ सांस्कृतिक उद्दीपन और मानवता दिशा का समन्वय्यात्मक विकास करना संभव हो सके।

मुख्य शब्द : *उन्मेष शिक्षा, अध्यापक शिक्षा आदि .*

अध्यापक शिक्षा का अर्थ

हम सब जानते हैं कि शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है जिसे मात्र किसी कौशल या कार्य के निष्पादन तक सीमित नहीं किया जा सकता है यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति में निहित आंतरिक क्षमताओं का विकास समग्र रूप से करने के साथ ही व्यक्तिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय दृष्टि या संदर्भ में उपयोगी और संसाधन संपन्न व्यक्तित्व के निर्माण के लिए कोशिश की जाती है। मात्र शिक्षा के माध्यम से ही ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण कर पाना संभव है जो वातावरण और मूल्यों के संरक्षण के साथ ही अनुकूल परिवेश के निर्माण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है क्योंकि व्यक्ति में मानवता दिशा और सांस्कृतिक चेतना का उन्मेष शिक्षा के द्वारा ही संभव है प्रशिक्षण या अन्य संप्रेषण व्यवहार के माध्यम से नहीं। अत: यह कहा जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा वह शैक्षिक आयोजन है जिसमें विभिन्न स्तरीय और वर्गीय अध्यापकों को इस तरह से शिक्षित करने के लिए पर्यतन किया जाता है कि आने वाले विद्यार्थियों को ज्ञान और मूल्यों के हस्तांतरण के साथ ही उनके समस्त शैक्षिक और विकासात्मक दायित्व को ग्रहण करने में वह सक्षम हो सके तथा उनमें तकनीकी कुशलता, वैज्ञानिक चेतना, संसाधन संपन्नता और नवाचार के साथ सांस्कृतिक उद्दीपन और मानवता दिशा का समन्वय्यात्मक विकास करना संभव हो सके। शिक्षण को एक व्यवसाय के रूप में स्वीकार करने के लिए जरूरी हो जाता है कि अध्यापक शिक्षा वह आयोजन हो जिसमें इस उधमगत नीतिबोध और संवेगात्मक पक्ष में भी दक्षता प्रदान करने की व्यवस्था हो इसलिए सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और समस्त चारित्रिक मर्यादाओं के साथ ही राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक मूल्यों को विकसित करने के लिए एक सफल प्रयास करना इस आयोजन का लक्ष्य होगा इस प्रकार अध्यापक शिक्षा केवल कार्यक्रम ही नहीं बल्कि एक ऐसा मिशन या आयोजन है जिसके माध्यम से राष्ट्रीय संदर्भ में आधुनिक एवं परिवर्तित अध्यापक की भूमिका के निर्वहन के लिए दक्षता और कुशलता प्राप्ति हेतु व्यक्तियों को शिक्षित किया जा सके।

अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता:

- अध्यापक शिक्षा सेअध्यापकों की विषय वस्तु पर अच्छी पकड़ होती है।
- अध्यापक शिक्षा से अध्यापकों को विविध छात्रों की जरूरतो को पूरा करने में मदद मिलती है।
- अध्यापक शिक्षा से अध्यापकों को समावेशी शिक्षण प्रथाओं और व्यक्तिगत सीखने के अनुभव के लिए रणनीतियां बनाने में मदद मिलती है।
- अध्यापक शिक्षा से अध्यापकों को प्रशिक्षण मिलता है जिससे उनमें शिक्षण की योग्यता आती है और शिक्षण में रोचकता आती है।

- अध्यापक शिक्षा से अध्यापकों को अपनी प्रतिभा को खोलने और उसका उचित प्रयोग करने में मदद मिलती है।
- अध्यापक शिक्षा से शिक्षा सुनियोजित होती है।

अध्यापक शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य

- अध्यापकों में विषय ज्ञान, शैक्षिक कौशल, बाल मनोविज्ञान की समझ और उचित दृष्टिकोण विकसित करना ।
- अध्यापकों को आत्मविश्वास और शिक्षण सुविधाओं का उपयोग करने की क्षमता देना ।
- अध्यापकों को छात्रों के हित में अहम भूमिका निभाने के लिए तैयार करना ।
- अध्यापकों को नैतिक मूल्यों का अंतर ग्रहण करवाना ।
- अध्यापकों को स्वयं और छात्रों का व्यक्तित्व विकास करना सीखना।
- परिवर्तनशील समाज में अध्यापक और विद्यालय की भूमिका का शिक्षकों को ज्ञान होना।
- अध्यापकों में अपने विषय के प्रति चयन, नवीन खोज और सीखने के अनुभव को विकसित करना।
- अध्यापकों में ऐसे कौशलों का विकास करना जो किशोरावस्था की शैक्षिक और व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान करने में सहायता प्रदान कर सके ।
- अध्यापकों को अध्यापन कार्य के लिए नई-नई प्रभावी वीधियों और तकनीकियों में दक्ष बनाना है।
- अध्यापकों द्वारा शोध कार्य, क्रियात्मक अनुसंधान, प्रयोगात्मक अनुसंधान को ऐसे क्षेत्र में करना जो कि उनके व्यवहार और कक्षा कक्ष की समस्याओं से संबंधित हो।
- अध्यापकों को व्यक्ति, समाज, राष्ट्र की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का ज्ञान करवाना और उन सब की प्राप्ति के लिए तैयार करवाना।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के प्रकार या प्रारूप

अध्यापक शिक्षा विशिष्ट होती है इसका मतलब है कि अध्यापक शिक्षा पर कार्यक्रम पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा की जरूरत के अनुसार भिन्न होते हैं विभिन्न स्तरों कक्षा में लेनदेन के लिए विशिष्ट तरीके और नीतियां है देश में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की कोई एकरूपता नहीं है कार्यक्रम एक राज्य से दूसरे राज्य में सामग्री और प्रक्रिया में व्यापक रूप से भिन्न होते हैं। मुख्य रूप से पांच प्रकार के अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम या संस्थान है -

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षक शिक्षा
2. प्राथमिक शिक्षक शिक्षा
3. माध्यमिक शिक्षक शिक्षा
4. उच्च शिक्षा
5. व्यावसायिक शिक्षक प्रशिक्षण

पूर्व प्राथमिक शिक्षक शिक्षा

पूर्व प्राथमिक अध्यापक शिक्षा कोर्स कई तरह के होते हैं जैसे मोंटेसरी ,किंडरगार्टन, नर्सरी, प्री बेसिक आदि इनमें दाखिले के लिए न्यूनतम योग्यता हायर सेकेंडरी है और कोर्स की अवधि 1 साल है कई संस्थानों में 2 सालों का प्रशिक्षण भी होता है यह प्रशिक्षण एक प्रमाण पत्र या डिप्लोमा पाठ्यक्रम है जो आमतौर पर राज्य सरकार द्वारा संचालित किया जाता है।

पूर्व प्राथमिक स्तर के अध्यापक शिक्षा के प्रारूप में तीन क्षेत्रों जैसे कि शिक्षण कला सिद्धांत, समुदाय के साथ कार्य और शिक्षण विधियां और अभ्यास को शामिल किया गया है।

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा

पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान ऐसे प्रशिक्षण विद्यालयों को बड़े पैमाने पर विस्तार हुआ, सामान्य तौर पर पाठ्यक्रम 2 वर्ष का होता है और प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता मैट्रिकुलेशन थी वर्तमान प्रवृत्ति प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता के रूप में उच्चतर माध्यमिक निर्धारित करने की है।

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा प्राथमिक शिक्षकों को पढ़ाने के लिए जरूरी कौशल सीखने वाले प्रशिक्षण पाठ्यक्रम इस कार्यक्रम में शामिल विद्यार्थियों को पढ़ाना, पाठ योजना बनाना, होमवर्क देना।

माध्यमिक शिक्षक शिक्षा

प्रशिक्षण महाविद्यालय माध्यमिक या उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए स्नातक शिक्षक तैयार करते हैं यह बी.एड. का कोर्स होता है इसमें अध्यापक शिक्षा के सिद्धांतों और कार्य प्रणाली पर जोर दिया जाता है प्रवेश के लिए न्यूनतम योग्यता स्नातक है राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा गत वर्षों में अध्यापक शिक्षा के लिए 28 नवंबर 2014 को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद विनिमय 2014 लागू किया। शिक्षा में स्नातक बी.एड. कार्यक्रम को 1 वर्ष के स्थान पर 2 वर्ष का कर दिया गया साथ ही अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन कार्यक्रम 4 वर्षीय एकीकृत बी.ए.- बी.एड., बी.एस.सी.- बी.एड. भी शुरू किया था इस कार्यक्रम का लक्ष्य विज्ञान और मानवीकी विज्ञान के साथ-साथ अध्यापक शिक्षा को एकीकृत कर शिक्षकों को तैयार करना था। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद विनिमय 2014 के 4 वर्ष बाद दिनांक 20 नवंबर 2018 को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद विनिमय 2018 लागू किया । इसी विनिमय को दिनांक 29 मार्च 2019 को संशोधित कर राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद संशोधन 2019 लागू किया गया विनिमय 2019 के माध्यम से अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में दो नवीन पाठ्यक्रमों को शामिल किया गया:-

- 4 वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.) (पूर्व प्राथमिक से प्राथमिक तक)
- 4 वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.) (उच्च प्राथमिक से माध्यमिक तक)

उच्च शिक्षा

शिक्षा में उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम 4 प्रकार के होते हैं :-

- दो वर्षीय एम.एड. कोर्स, एकीकृत बी.एड.-एम.एड. तीन वर्षीय कोर्स
- शिक्षा में 2 वर्षीय एम.ए.
- एम.एड. के बाद शिक्षा में पीएच.डी
- बी.एड. के बाद शिक्षा के कुछ पहलुओं में सनातकोतर डिप्लोमा।

व्यावसायिक शिक्षक-प्रशिक्षण

तकनीकी विषयों में अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए जाते है विशेषज्ञ शिक्षकों को तैयार करने के लिए विभिन्न पाठ्यक्रम और संस्थान है जो इस प्रकार है:-

- शारीरिक शिक्षा में एक वर्षीय डिप्लोमा
- संगीत नृत्य चित्रकला और ललित कला के शिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कोर्स
- गृह विज्ञान के लिए अध्यापकों को तैयार करने हेतु 1 वर्षीय प्रशिक्षण कोर्स
- अंग्रेजी, हिंदी और भूगोल आदि के शिक्षण में विशेषज्ञ तैयार करने के लिए कोर्स

शिक्षकों की बदलती भूमिका

एक राष्ट्र को आगे बढ़ाने में एक अध्यापक का बहुत बड़ा योगदान होता है क्योंकि एक अध्यापक ही विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ नैतिक व चारित्रिक मूल्यों का ज्ञान भी देता है एक अच्छा नेता तभी बनता है जब एक योग्य और ईमानदार व्यक्ति होता है इसलिए एक अध्यापक का देश को आगे बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान होता है वर्तमान समय में तकनीकी का युग है आज के समय को देखते हुए अध्यापकों की भूमिका भी बदल गई है जिसमें निम्न बातें शामिल है:-

- सीखने में सहायक:- एक अध्यापक विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया से मार्गदर्शन देखकर उनके कौशल विकास और कठिन अवधारणाओं को समझने में सहायता प्रदान करता है आज अध्यापक विद्यार्थियों को नए केवल ज्ञान देते हैं बल्कि उन्हें जीवन में जरूरी कौशल भी सिखाते हैं।
- प्रौद्योगिकी को शिक्षण में शामिल करना:- अध्यापक का प्रौद्योगिकी को शिक्षक के लिए एक उपकरण के रूप में अपनाना आधुनिक शिक्षण का एक अभिन्न अंग है अध्यापक अपने पाठों को तकनीकी संसाधन, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्म और शैक्षिक ऐप में शामिल करते हैं क्योंकि आज का युग तकनीकी युग है इसमें इंटरनेट सहायक संसाधनों से भरा हुआ है जब कोई अध्यापक छात्रों को सहयोगात्मक दृष्टिकोण से पढाता है तो संसाधन मिलने पर छात्र अधिक गहराई से सीखते हैं।
- विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहन देना:- आज अध्यापक छात्रों को आलोचनात्मक रूप से सोचने, जानकारी का विश्लेषण करने और वास्तविक दुनिया की स्थितियों में ज्ञान को लागू करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं आलोचनात्मक सोच ,समस्या समाधान और रचनात्मकता में एक महत्वपूर्ण कौशल है।
- अलग-अलग निर्देश:- एक अध्यापक अपने विद्यार्थियों की क्षमता और सीखने की शैलियो को पहचान जाता है और इन विविधता को पहचानते हुए ही अध्यापक व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अलग-अलग निर्देशों का उपयोग करते हैं।
- वैश्विक जागरूकता को बढ़ावा देना:- वैश्वीकरण ने दुनिया को पहले से कहीं ज्यादा आपस में जोड़ दिया है अध्यापक विद्यार्थियों को विविध दृष्टिकोणों, संस्कृतियों और वैश्विक मुद्दों से परिचित करवाते हैं जिससे वैश्विक जागरूकता और क्षमता को बढ़ावा मिलता है।
- विद्यार्थियों को भविष्य के लिए योजनाएं बनाने में सहायता प्रदान करना:- आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है और छात्रों के लिए अपनी भविष्य के लिए विविध विकल्प है कि उनकों भविष्य में क्या बनना है इस मामले में एक अध्यापक उसके मनोविज्ञान को समझते हुए भविष्य के लिए योजनाकार की भूमिका निभाता है।
- जीवन भर सीखने के लिए प्रेरित करना:- अध्यापक जीवन पर सीखते ही रहते हैं और अध्यापक विकास की मानसिकता को बढ़ावा देते हैं तथा विद्यार्थियों को लगातार सीखने पर जोर देते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा का बहुत ही महत्व है क्योंकि आज के समय में शिक्षक केवल अध्यापक की नहीं बल्कि वह मार्गदर्शक, सलाहकार, आजीवन सीखने की समर्थक है उनकी भूमिका कक्षा से ज्यादा है जो विद्यार्थियों के व्यक्तिगत और व्यवसायिक विकास को प्रभावित करती है अध्यापक ऐसे नायक है जो शिक्षा के माध्यम से मानव प्रगति में एक उज्जवल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

संदर्भ सूची

- डॉक्टर जी.सी. भट्टाचार्य: अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशंस
- एन.आर. सक्सेना, बी.के. मिश्रा, आर.के. मोहंती: अध्यापक शिक्षा, प्रकाशक: विनय रखेजा
- भारत में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान(आर.आई. ई.): 7 उद्देश्य
- भारत में सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण शिक्षा
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा
- आचार्य, शारदा (2017). शिक्षक प्रशिक्षण और आधुनिक परिप्रेक्ष्य. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।
- गुप्ता, एम.के. (2020). "शिक्षकों की भूमिकाओं में परिवर्तनशीलता: समकालीन संदर्भ". भारतीय शिक्षा समीक्षा, खंड 28, अंक 3, पृष्ठ 45-60।
- मिश्रा, आर.के. (2019). शिक्षक शिक्षा का आधुनिक परिप्रेक्ष्य. जयपुर: विद्याप्रकाशन।